SHRI SOM PAL: Welcome, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): The Finance Minister, please.

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL), 1997-98 (AUGUST, 1997)

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): Mr. Vice-Chairman, Sir, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (General) 1997-98 (August, 1997).

Thank you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Som Palji, you may continue now.

SHORT DURATION DISCUSSION ON THE PREVAILING SITUATION IN BIHAR—(contd.)

श्री सोमपाल: महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि इस दिल्ली महानगरी में मैं भी 1957 में गांव से आया था और मैंने भी पढ़ना-लिखना वहां सीखा जहां धरती के ऊपर अक्षर बनाने सीखे थे अंगुली से। उस समय न कलम थी, न तख्ती भी, न दवात थी और न स्याही थी। उस समय में छटी से लेकर दसवीं तक अपने गांव की पास के कस्बे में साढ़े पांच किलोमीटर रोज जाता था और साढ़े पांच किलोमीटर वापस आता था। वहां रास्ते में दो पानी पिलाने की प्याऊ पड़ती थीं एक पंडित जी की थी और एक लाला जी की थी। मैं एक ऐसे वर्ग से आता हूं, मैं जाति को मानता नहीं हूं और उसका प्रमाण यह है कि मेरे पिताश्री ने जब मेरा नाम विद्यालय में अंकित कराया तो उसके सामने जाति सूचक कोई शब्द नहीं था। मेरे से छोटा नाम यहां किसी सांसद का नहीं है सोमपाल। ...**(व्यवधान)**...

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश): मेरा छोटा नाम है राघवजी।

श्री गोविन्दराम मिरी: राघवजी है।

श्री सोमपाल: उनके सामने जी लगा है और राघव लगा है। मैं यह कहना चाहता हूं कि उस समय मैंने व्यक्तिगत रूप से देखा है। मैं यह किसी किताब में से तर्क ढूंढ़ कर नहीं लाया हूं, किसी पुस्तक में से नहीं लाया हूं। जब हम जाते थे तो व ह दो पानी की प्याऊ पड़ती थी। जब हम पानी पीते थे तो दोनों प्याऊ के ऊपर यह नियम था कि बीच में ढाक का पत्ता या लकड़ी की नुलकी लगा दी जाती थी कहीं यह पानी मिट नहीं जाए। यह तो हमारी जाति के साथ, जो कि एक मध्यम जाति जाटों की, उसके साथ व्यवहार था। ..**(व्यवधान)**..

डा० रणबीर सिंह (उत्तर प्रदेश): यह गलत बात कर रहे हैं।

श्री सोमपाल: मैं सन् 1951 से 1956 की बात कर रहा हूं। अग्रवाल जी आप जहां से आ रहे हैं वहां तो जूतें नहीं पहनने दिए जाते हैं, शर्म नहीं आती है आप लोगों को। ..

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): नहीं-नहीं, अग्रवाल जी नहीं बोल रहे हैं।

डा० रणबीर सिंह: आप ऐसी बात मत कहिए।

श्री सोमपाल: उपसभाध्यक्ष महोदय, उनको नियमित करिए....

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): नहीं, डाक्टर साहब कह रहे हैं, डाक्टर साहब ने कहा है। ...**(व्यवधान)**...

डा० रणबीर सिंह: मैं तो उस इलाके में इनसे पहले से जी रहा हूं, ऐसा कभी नहीं हुआ।...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी): चलिए आप अपने विषय पर बोलिए। नहीं तो आपके विचारों की जो कड़ी है वह गड़बड़ हो जाएगी।

श्री सोमपाल: महोदय, मेरे विचारों की कड़ी किसी से गड़बड़ नहीं होती है परन्तु इसका मतलब यह है कि मेरे ऊपर मिथ्याचार का आरोप लग रहा है।...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): मिथ्याचार का आरोप नहीं है।

श्री सोमपाल: इसको मैं कैसे मान लूं। मैं तो अपने पर बीती हुई बात कह रहा हूं। डाक्टर साहब तो बहुत पहले अमेरिका पढ़ने के लिए चले गए थे। ये बड़े घर से आते हैं और हमारे पास दिल्ली विश्वविद्यालय की फीस नहीं थी।

डा० रणबीर सिंह: यह दूसरी गलत बात कह रहे हैं।

श्री सोमपाल: आप 1958 में अमेरिका गए नहीं...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी): बाद में गए हैं, उतनी जल्दी नहीं गए हैं।